NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I

(Principles of Microeconomics-I)

B.E.C.C.-131

B.A. General - 1st Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Gajendra Nayal*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–I

(Principles of Microeconomics-I)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-4

Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-4

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4

Sample Question Paper–1 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. अर्थशास्त्र का परिचय 1
(Introduction to Economics)

2. माँग तथा माँग की लोच 18
(Demand and Elasticity of Demand)

3. आपूर्ति और आपूर्ति की लोच 45
(Supply and Elasticity of Supply)

4. व्यवहार में मांग और आपूर्ति 57
(Demand and Supply in Practice)

5. उपभोक्ता व्यवहार : गणन दृष्टिकोण 73
(Consumer Behaviour : Cardinal Approach)

6. उपभोक्ता व्यवहार : साधारण दृष्टिकोण 88
(Consumer Behaviour : Ordinal Approach)

7. एक चर उपादान के साथ उत्पादन 110
(Production With One Variable Input)

8. दो चर उपादानों के साथ उत्पादन 117
(Production With Two Variable Inputs)

9. पैमाने के प्रतिफल 130
(Returns to Scale)

10. उत्पादन की लागत 138
(The Cost of Production)

11. पूर्ण प्रतियोगिता 148
(Perfect Competition)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–I

(Principles of Microeconomics–I)

B.E.C.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक भाग से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।*

भाग–क

नोट : इस भाग के किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. (क) एक आपूर्ति वक्र खिसकता क्यों है? कारण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-47, 'पूर्ति का नियम'

(ख) निम्नलिखित से माँग की तिरछी/आड़ी कीमत लोच ज्ञात कीजिए। क्या वस्तु प्रतिस्थापन हैं या पूरक हैं? कारण दीजिए।

कार की कीमत (रुपये में)	पेट्रोल की माँगी गई मात्रा (लीटर में)
3,20,000	8,000
3,50,000	7,600

उत्तर–पेट्रोल की माँगी गई मात्रा में परिवर्तन

$= 7600 - 8000 = -400\ l$

कार की कीमत में परिवर्तन = 3,50,000 – 3,20,000

Rs. 30,000

पेट्रोल की मूल मात्रा = 8000 l

कार का मूल मूल्य = Rs. 3,20,000

मांग की आड़ी-तिरछी कीमत लोच

$$= \frac{\Delta Q_x}{\Delta P_y} \times \frac{P_y}{Q_x}$$

जबकि x पेट्रोल और y कार है

$$EQ_xP_y = \frac{-400}{30,000} \times \frac{3,20,000}{8,000}$$

$$= -0.533$$

चूँकि कार की आड़ी-तिरछी कीमत लोच ऋणात्मक है, अत: कार के मूल्य और पेट्रोल की मांगी गयी कीमत में व्युत्क्रम संबंध है। अत: यह पूरक वस्तु की श्रेणी में आती है।

प्रश्न 2. (क) एक आरेख की सहायता से बहु-वस्तु स्थिति में उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–बहु-वस्तु की स्थिति उपभोक्ता संतुलन–एकल वस्तु में उपभोक्ता संतुलन इस अर्थ में अवास्तविक प्रतिमान है कि वास्तविक जीवन में उपभोक्ता बड़ी संख्या में वस्तुओं का उपभोग करते हैं। हमारा अगला प्रतिमान कई वस्तुओं की स्थिति में संतुलन में संबंधित है। यह प्रतिमान भी उपभोक्ता की सीमित आय की मान्यता तथा वस्तुओं की ह्रासमान सीमांत उपयोगिता के अंतर्गत कार्य करता है। इस प्रकार, उपयोगिता अधिकतमीकरण में उपभोक्ता उस वस्तु पर पहले खर्च करेगा, जो सबसे ज्यादा उपयोगिता प्रदान करती है, उपभोक्ता संतुलन पर तब पहुँचेगा, जब वह अलग-अलग वस्तुओं पर खर्च किए गए अंतिम रुपये से उपयोगिता का समान स्तर प्राप्त करेगा।

बहु-वस्तुओं की इस स्थिति का सम-सीमांत उपयोगिता नियम से जाना जाता है, एक उपभोक्ता जिसके पास अनेक वस्तुओं का विकल्प है, अपनी सीमित आय को इस तरीके से आवंटित करता है कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च होने वाला अंतिम रुपया समान सीमांत उपयोगिता प्रदान करता है। माना कि एक उपभोक्ता केवल दो वस्तुओं x (जिसकी कीमत P_x है) तथा y (जिसकी कीमत P_y है) उपभोग करता है। इस प्रकार वह उसकी सीमांत उपयोगिता तथा कीमतों के समानता के द्वारा अपनी उपयोगिता को अधिकतम करने का प्रयास करेगा–

$$MU_x = P_x (MU_m)$$
$$MU_y = P_y (MU_m)$$

इन शर्तों के दिए होने पर, एक उपभोक्ता संतुलन में होगा जब–

$$MU_x/P_x (MUm) = MU_y/P_y (MUm)$$

बहु-वस्तु स्थिति के लिए दो वस्तु स्थिति को सामान्यीकृत किया जा सकता है। मान लें कि एक उपभोक्ता अनेकों वस्तुओं का उपभोग करता है, वह संतुलन में होगा जब–

$$MU_x/P_x = MU_x = MU_y/P_y = MU_c/P_c = ...MU_z/P_z$$

चित्र में एक बिंदु पर संतुलन को प्राप्त किया जाता है जब–

$$MU_x/P_x = MU_y/P_y$$

www.neerajbooks.com

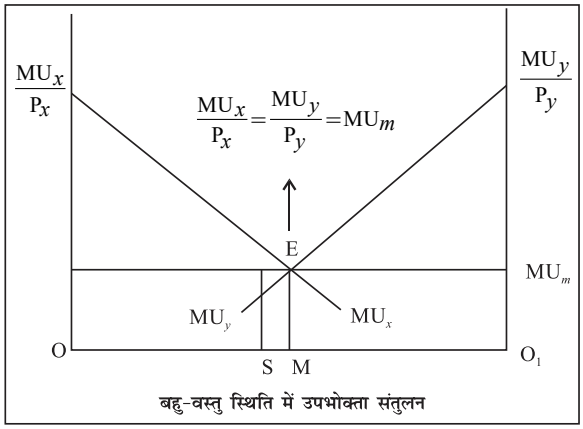

बहु-वस्तु स्थिति में उपभोक्ता संतुलन

(ख) आरेख की सहायता से दर्शाइए कि एक सामान्य वस्तु की स्थिति में कीमत प्रभाव, आय प्रभाव और प्रतिस्थापन प्रभाव का जोड़ होता है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-95, 'उपभोक्ता संतुलन पर वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव', पृष्ठ-96, 'कीमत प्रभाव', 'आय प्रभाव', 'प्रतिस्थापन्न प्रभाव'

प्रश्न 3. (क) समोत्पाद वक्र क्या है? *(i)* पूर्ण प्रतिस्थापन *(ii)* पूर्णतया पूरक उत्पादन का कारकों की स्थिति में समोत्पाद वक्रों को आरेखित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-117, 'सम-उत्पादन वक्र', पृष्ठ-125, प्रश्न-3

(ख) एक उत्पादक केवल ऊपरी और निचली कटक रेखाओं के मध्य ही क्यों उत्पादन करता है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-118, 'ऋजु रेखाएं अथवा उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाएं'

प्रश्न 4. (क) ATC, AVC और MC लागत वक्रों के बीच संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-140, 'अल्पावधि लागत फलन'

(ख) ''दीर्घकाल औसत लागत वक्र कुशलता वक्र के रूप में भी जाना जाता है।'' एक आरेख की सहायता से समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-146, प्रश्न-12

भाग-ख

नोट : इस भाग से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 5. उत्पादन संभावना वक्र (PPC) की अवधारणा की व्याख्या कीजिए तथा बेरोजगारी और उत्पादन के कारकों के अकुशल प्रयोग की समस्या पर प्रकाश डालिए। क्या PPC एक सरल रेखा हो सकती है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'उत्पादन संभावना वक्र', 'विशेषताएं', पृष्ठ-5, 'क्या उत्पादन केवल वक्र पर ही होता है?', पृष्ठ-4, 'क्या उत्पादन संभावना वक्र एक सीधी रेखा हो सकती है?'

प्रश्न 6. माँग के गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-74, 'गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण'

प्रश्न 7. पूर्ति की लोच के विभिन्न प्रकार कौन-से हैं? सिद्ध कीजिए कि मूल बिन्दु से गुजरने वाला पूर्ति वक्र इकाई के बराबर लोच वाला पूर्ति वक्र होता है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-49, 'आपूर्ति की लोच के प्रकार'

इसे भी देखें–इकाई लोचदार पूर्ति (Unitary Elastic Supply) $e_s = 1$)–जब किसी वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन ठीक उसी अनुपात में होता है, जिस अनुपात में कीमत परिवर्तन हुआ है, तब वस्तु की पूर्ति लोच इकाई के बराबर होती है।

अर्थात् $\frac{\Delta Q}{Q} = \frac{\Delta P}{P}$

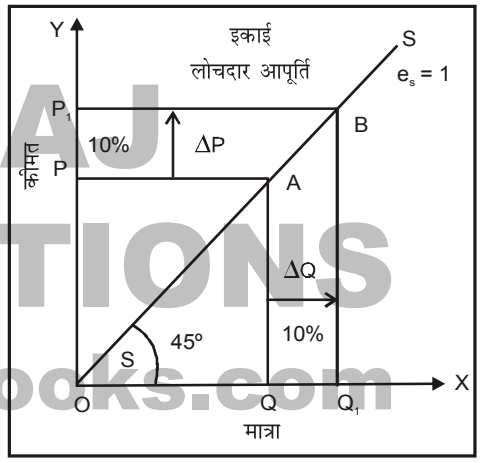

उदाहरण के लिए, यदि कीमत में 10% परिवर्तन होने से पूर्ति में भी 10% का ही परिवर्तन होता है, तब ऐसी पूर्ति इकाई लोचदार पूर्ति कहलाती है। चित्र में इकाई लोचदार पूर्ति वक्र SS दिखाया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि कीमत में 10% परिवर्तन होने से पूर्ति में भी 10% का परिवर्तन होता है अर्थात् कीमत का आनुपातिक परिवर्तन पूर्ति के आनुपातिक परिवर्तन के ठीक बराबर है। अत: पूर्ति लोच इकाई है।

यदि आपूर्ति लोचशील हो जाए, तो वक्र में निम्न प्रकार से परिवर्तन होगा–

पूर्णतया लोचदार पूर्ति (Perfectly Elastic Supply) ($e_s = \infty$)–जब कीमत में परिवर्तन न होने पर भी अथवा अत्यन्त सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है, तब वस्तु की पूर्ति लोच पूर्णतया लोचदार (Perfectly Elastic) होती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I

Principles of Microeconomics-I

अर्थशास्त्र का परिचय

(Introduction to Economics)

1

परिचय

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग का अध्ययन किया जाता है। 'अर्थशास्त्र' शब्द संस्कृत शब्दों अर्थ (धन) और शास्त्र की संधि से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है–'धन का अध्ययन'। किसी विषय के संबंध में मनुष्यों के कार्यो के क्रमबद्ध ज्ञान को उस विषय का शास्त्र कहते हैं, इसलिए अर्थशास्त्र में मनुष्यों के अर्थ संबंधी कार्यो का क्रमबद्ध ज्ञान होना आवश्यक है।

अर्थशास्त्र का प्रयोग यह समझने के लिये भी किया जाता है कि अर्थव्यवस्था किस तरह से कार्य करती है और समाज में विभिन्न वर्गो का आर्थिक सम्बन्ध कैसा है। अर्थशास्त्रीय विवेचना का प्रयोग समाज से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है; जैसे–अपराध, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, कानून, राजनीति, धर्म, सामाजिक संस्थान, युद्ध इत्यादि।

ब्रिटिश अर्थशास्त्री **अल्फ्रेड मार्शल** ने इस विषय को परिभाषित करते हुए इसे 'मनुष्य जाति के रोजमर्रा के जीवन का अध्ययन' बताया है। मार्शल ने पाया था कि समाज में जो कुछ भी घट रहा है, उसके पीछे आर्थिक शक्तियां होती हैं, इसीलिए समाज को समझने और इसे बेहतर बनाने के लिए हमें इसके अर्थिक आधार को समझने की जरूरत है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अर्थशास्त्र की परिभाषा

अर्थशास्त्र वह शास्त्र है, जिसमें व्यक्ति धन से जुड़ी क्रियाओं का अध्ययन करता है, एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा है।

अर्थशास्त्र एक विज्ञान है, जो मानव व्यवहार का अध्ययन उसकी आवश्यकताओं (इच्छाओं) एवं उपलब्ध संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग के मध्य संबंध का अध्ययन करता है। जिसमें धन संबंधित क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, अर्थशास्त्र कहलाता है। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री का संकेत इसकी परिभाषा से मिलता है।

लियोनेल रोबिंसन के अनुसार आधुनिक अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार है, "वह विज्ञान जो मानव स्वभाव का वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों और उनके प्रयोग के मध्य अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करता है।"

इसका अभिप्राय है कि अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो मनुष्य के उन कार्यों का अध्ययन करता है, जो इच्छित वस्तु और उसके परिमित साधनों के रूप में उपस्थित होते हैं, जिनका उपयोग वैकल्पिक या कम से कम दो प्रकार से किया जाता है। यह भी कह सकते हैं कि

1. अर्थशास्त्र विज्ञान है;
2. अर्थशास्त्र में मनुष्य के कार्यों के संबंध में विचार होता है;
3. अर्थशास्त्र में उन्हीं कार्यों के संबंध में विचार होता है जिनमें–
   (क) इच्छित वस्तु प्राप्त करने के साधन परिमित रहते हैं और
   (ख) इन साधनों का उपयोग वैकल्पिक रूप से कम से कम दो प्रकार से किया जाता है।

दुर्लभता की अवधारणा

दुर्लभता (scarcity) का अर्थ है कि उपलब्ध संसाधन सभी मांगों और जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ हैं। दुर्लभता और संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के कारण ही अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता है। अतएव यह विषय प्रेरकों और संसाधनों के प्रभाव में विकल्प का अध्ययन करता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

दुर्लभता या अभाव (Scarcity) एक मूलभूत आर्थिक समस्या है। मनुष्य की आवश्यकताएँ लगभग असीम हैं, जबकि साधन सीमित हैं। इसका सीधा निष्कर्ष यह है कि समाज, मनुष्य की सारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सदा असमर्थ है।

आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के कारण–

1. असीमित मानवीय आवश्यकताएँ–मनुष्य की आवश्यकताएँ असीमित हैं और उनको पूरे करने वाले साधन सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं, इसलिए उपभोक्ता सबसे पहले तीव्र आवश्यकताओं को पूरे करने का प्रयास करता है।

2. सीमित साधन–आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए मनुष्य के पास सीमित मात्रा में साधन उपलब्ध होते हैं, जिनसे वह अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति एक साथ नहीं कर सकता।

3. साधनों के वैकल्पिक प्रयोग सम्भव होना–सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोग हो सकते हैं; जैसे–दूध का प्रयोग दही, मिठाई आदि बनाने में किया जाता है।

असीमित आवश्यकताओं, सीमित साधनों एवं साधनों के वैकल्पिक प्रयोग होने के कारण चयन की समस्या उत्पन्न होती है। यही आर्थिक समस्या है।

उत्पादन का अर्थ

परम्परागत अर्थशास्त्री उत्पादन को भौतिक वस्तुओं का निर्माण मानते थे। इन अर्थशास्त्रियों की यह विचारधारा इस वैज्ञानिक तथ्य पर आधारित थी कि मानव न तो किसी पदार्थ का निर्माण कर सकता है और न ही विनाश।

यह कार्य केवल प्रकृति द्वारा ही सम्भव है। इस प्रकार प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री उत्पादन के अभिप्राय का एक संकुचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते थे, जिसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

यह सत्य है कि मानव किसी पदार्थ का निर्माण नहीं कर सकता, किन्तु मानव अपने प्रयत्नों एवं अन्य साधनों के सहयोग से पदार्थों के रूप, रंग, आकार आदि में परिवर्तन करके उनकी उपयोगिता में वृद्धि अवश्य कर सकता है।

उदाहरण के लिए, मिट्टी एक पदार्थ है, जिसका निर्माण अथवा विनाश मानव नहीं कर सकता, किन्तु मानव अपने प्रयत्नों एवं अन्य साधनों से जब इस मिट्टी का स्वरूप परिवर्तित करके एक घड़ा बना देता है, तब उपयोगिता का सृजन होता है, क्योंकि पदार्थ के परिवर्तित स्वरूप अर्थात् घड़े से मानव आवश्यकता की पूर्ति होती है। वस्तुय अर्थों में यही उत्पादन है।

आधुनिक अर्थशास्त्री उपयोगिता में वृद्धि के स्थान पर मूल्य वृद्धि को उत्पादन मानते हैं। दूसरे शब्दों में, उत्पादन के लिए उपयोगिता के सृजन के साथ-साथ मूल्य वृद्धि का भी होना आवश्यक है।

यदि किसी कार्य द्वारा किसी वस्तु की उपयोगिता में वृद्धि तो होती है, किन्तु उसका विनिमय मूल्य नहीं बढ़ता, तब इस कार्य को उत्पादन नहीं कहा जायेगा। दूसरे शब्दों में, उत्पादन के लिए वस्तु के प्रयोग मूल्य अर्थात् उपयोगिता के साथ-साथ वस्तु के विनिमय मूल्य अर्थात् वस्तु की कीमत दोनों में वृद्धि होना अनिवार्य है।

अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएं

सभी आर्थिक समस्याओं की जड़ अल्पता है।

किसी भी अर्थव्यवस्था को चाहे वह सरल हो या जटिल, विकसित हो या अल्पविकसित, मुक्त हो या नियंत्रित इन तीन मूलभूत तथा परस्पर संबंधित (interdependent) आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है–

1. किन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जाए तथा कितनी मात्रा में?

2. किस प्रकार इन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए अर्थात किन विधियों या तकनीकों या किन साधन मिश्रणों द्वारा इसका उत्पादन किया जाए?

3. किस प्रकार उत्पादित वस्तुओं का समाज के सदस्यों में वितरण किया जाए अर्थात् किन लोगों के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाए?

यदि साधन असीमित होते तथा उनके वैकल्पिक प्रयोग होते, तो किन वस्तुओं का, किस प्रकार तथा किन लोगों के लिए उत्पादन किया जाए, ये सब समस्याएं उत्पन्न ही नहीं होतीं। साधनों की सीमितता तथा वैकल्पिक प्रयोग की संभावना के कारण ही चुनाव की समस्याएं पैदा होती हैं। आजकल की दुनिया में मनुष्य की आवश्यकताएं, जिन्हें वस्तुओं के उपभोग द्वारा संतुष्ट किया जा सकता है, असीमित हैं। व्यक्ति की इच्छाओं की तुलना में विद्यमान साधनों (अच्छा खाना, कपड़ा, मकान, पढ़ाई-लिखाई, मनोरंजन आदि) की पूर्ति बहुत ही अपर्याप्त है।

मान लीजिए, अर्थव्यवस्था के पास भूमि, श्रम व पूंजी के रूप में असीमित साधन हैं। ऐसी स्थिति में वहां पर कोई भी आर्थिक समस्या नहीं होगी, क्योंकि ऐसी स्थिति में अर्थव्यवस्था पर्याप्त मात्रा में वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन कर सकती है, जिससे सभी व्यक्तियों की सभी इच्छाओं को व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से पूरा किया जा सकता है। तब वहां पर कोई भी आर्थिक वस्तु नहीं होगी अर्थात् कोई भी वस्तु मांग की तुलना में सीमित नहीं होगी और इस प्रकार अर्थशास्त्र के अध्ययन की संभवतः आवश्यकता ही न होगी। सभी वस्तुएं वायु अथवा धूप की भांति निःशुल्क (free) होंगी। किंतु वास्तविकता यह है कि व्यक्तियों द्वारा इच्छित वस्तुओं व सेवाओं की थोड़ी मात्रा में ही उत्पादन करना संभव है।

1. क्या उत्पादन किया जाए? (What to produce?)– साधनों को एक से अधिक प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए श्रम की इकाई को एक भूमि के टुकड़े पर कृषि के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है अथवा फैक्ट्री निर्माण या मकान बनाने के लिए भी। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उत्पादन साधनों को उन सारी क्रियाओं के

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

लिए जिनके लिए यह आवश्यक है, एक ही समय में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता, इसीलिए समाज को इन विभिन्न क्रियाओं के प्रयोग में से चुनाव करना पड़ता है। साधन के 'अ' प्रयोग का चुनाव करने का अर्थ हुआ प्रयोग 'ब', 'स', 'व', 'द', को अस्वीकारना। यदि किसी उत्पादन साधन अथवा उत्पादन साधनों के ही मिश्रण को एक वस्तु (जैसे कि स्टील) के उत्पादन में प्रयोग किया जाए, तब यही उत्पादन साधन किसी दूसरी वस्तु (जैसे कि खाद्यान्नों) के उत्पादन में उपलब्ध नहीं होंगे। अत: खाद्यान्न का उत्पादन अपेक्षाकृत कम होगा। इसी प्रकार यदि समाज वर्तमान में अधिक उपयोग करने का निर्णय करता है, तो भविष्य के लिए उपभोग कम करना होगा अर्थात् मशीनरी तथा पूंजीगत वस्तुओं के लिए (जो कि भविष्य में अधिक उपभोग वस्तुओं का उत्पादन कर सकती है) कम उत्पादन साधन बचेंगे। अत: यह प्रश्न कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए तथा किन वस्तुओं का नहीं, सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोगों (alternative uses) में आवंटन (allocation की समस्या से संबंधित है।

साधनों के आवंटन या वितरण (resource allocation) के लिए हमें दो प्रकार की सूचनाएं चाहिए। एक तो हमें लोगों की इच्छाएं, इनकी अधिमान तीव्रता (preference intensity) के अनुसार ज्ञात होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, साधनों के युक्तियुक्त आवंटन के लिए समाज को अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकतानुसार (according to priority) निश्चित करना चाहिए। दूसरे दिए गए साधनों की सहायता से वस्तु की विभिन्न उत्पादन संभावनाओं (production possibilities) के बारे में भी सूचना उपलब्ध होनी चाहिए। इस प्रकार की सूचना–उत्पादन संभावना वक्र (production possibilities curve) से उपलबध होती है। ये दोनों कारक अर्थात् अधिमान तथा उत्पादन संभावनाएं मिलकर कीमतों का निर्धारण करते हैं। इन कीमतों के आधार पर ही साधनों का विभिन्न प्रयोग में आवंटन संभव होता है।

2. कैसे उत्पादन किया जाए? (How to Produce?)–दूसरी समस्या साधनों के संगठन से संबंधित है अर्थात् तकनीक के चुनाव की समस्या। यह समस्या तब पैदा होती है, जबकि वस्तुओं के उत्पादन के एक से अधिक संभव तरीके हो। उदाहरण के लिए, कृषि वस्तुओं का उत्पादन दो तरीकों से किया जा सकता है। पहला तरीका है–अधिक भूमि पर विस्तृत खेती जिसमें कि मशीन और खाद जैसे साधनों का अल्प मात्रा में प्रयोग किया जाता है और भूमि का अधिक दूसरा तरीका है–कम भूमि पर गहन खेती, जिसमें खाद, श्रम व मशीन जैसे साधनों का अधिक मात्रा में तथा भूमि का कम मात्रा में प्रयोग किया जाता है। किसी वस्तु की समान मात्रा उत्पादन करने के लिए दोनों तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है। एक तरीका भूमि की बचत करना है तथा दूसरा अन्य साधनों की बचत करता है। औद्योगिक क्षेत्र में भी प्राय: इस प्रकार की संभावनाएं होती हैं अर्थात् इस क्षेत्र में भी किसी वस्तु का कई विभिन्न तकनीकों के द्वारा उत्पादन करना संभव है। ये विभिन्न तकनीकें दो प्रकार की हो सकती हैं– एक तो अति 'श्रम प्रधान' (highly labour intensive), जिसमें श्रम अधिक तथा पूंजी उपकरण कम और दूसरी, 'पूंजी प्रधान' (capital intensive), जिसमें मशीनें अधिक तथा श्रम कम मात्रा में प्रयुक्त होता है। परंतु यह विकल्प केवल उस सीमा तक उपलब्ध होगा, जहां तक कि उत्पादन के एक साधन के स्थान पर दूसरे को प्रतिस्थापित (substitute) किया जा सके।

3. किसके लिए उत्पादन किया जाए? (For whom to produce?)–तीसरी समस्या राष्ट्रीय आय के समाज के सदस्यों में वितरण से संबंधित है, क्योंकि एक अर्थव्यवस्था केवल सीमित मात्रा में ही वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन कर सकती है (साधनों की परिमितता के कारण), अत: सभी व्यक्तियों को सभी इच्छाओं को पूर्ण करना संभव नहीं हो पाता। यह बात समाज के लिए उपलब्ध वस्तुओं व सेवाओं की सीमित मात्रा को विभिन्न व्यक्तियों व समुदायों में वितरण करने का आधार ढूंढने की समस्या को जन्म देती है। दूसरे शब्दों में, अर्थव्यवस्था को यह निर्णय करना पड़ेगा कि इस सीमित उत्पादन को कौन लोग प्राप्त करेंगे और कितनी मात्रा में तथा कौन लोग इससे वंचित रहेंगे अथवा दूसरे शब्दों में, किस सिद्धांत के आधार पर राष्ट्रीय उत्पादन का वितरण होगा।

अर्थशास्त्र में वृद्धि की समस्या

देशों, क्षेत्रों या व्यक्तिओं की आर्थिक समृद्धि को आर्थिक विकास कहते हैं। नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास उन सभी प्रयत्नों को कहते हैं, जो किसी जन-समुदाय की आर्थिक स्थिति व जीवन-स्तर के सुधार के लिये अपनाये जाते हैं।

वर्तमान युग की सबसे महत्वपूर्ण समस्या 'आर्थिक विकास' की समस्या है। आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना राजनैतिक स्वतन्त्रता का कोई महत्त्व (उपयोग) नहीं है। विकास और उससे जुड़े हुए मुद्दों के इस महत्त्व के कारण ही अर्थशास्त्र के क्षेत्र में विकास-अर्थशास्त्र नामक एक अलग विषय का ही उदय हो गया। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से विकास-अर्थशास्त्र के एक स्वतंत्र विषय के रूप में अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न-सा उभरता दिखाई दे रहा है। कई अर्थशास्त्री 'विकास-अर्थशास्त्र' नामक अलग विषय की आवश्यकता से ही इनकार करने लगे हैं, इनमें प्रमुख हैं-**स्लट्ज, हैबरलर, बार, लिटिल, वाल्टर्स** आदि। अर्थशास्त्रियों का एक वर्ग 'विकास-अर्थशास्त्र' को ही समाप्त कर देने की मांग करने लगा है।

सार्वजनिक और निजी वस्तुओं के बीच चयन

निजी वस्तु–एक निजी वस्तु एक उत्पाद है, जिसे उपभोग करने के लिए खरीदा जाना चाहिए और एक व्यक्ति द्वारा खपत दूसरे व्यक्ति को इसका उपभोग करने से रोकती है। दूसरे शब्दों में,

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

एक वस्तु को एक निजी वस्तु माना जाता है, यदि वस्तु प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा होती है और यदि वस्तु उपभोक्ता किसी और को इसका उपभोग करने से रोकता है।

निजी वस्तुओं के उदाहरणों में हवाई जहाज की सवारी और सेलफोन शामिल हैं। निजी वस्तुओं को मुक्त सवार समस्या का अनुभव होने की संभावना कम है, क्योंकि एक निजी वस्तु खरीदी जाती है; यह मुफ्त में आसानी से उपलब्ध नहीं है। एक निजी वस्तु उत्पादन करने में कंपनी का लक्ष्य लाभ कमाना है। राजस्व द्वारा बनाए गए प्रोत्साहन के बिना, एक कंपनी वस्तु उत्पादन नहीं करना चाहती है।

अक्सर, निजी वस्तुओं की उपलब्धता सीमित होती है, जिससे वे प्रकृति में बाहर हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, केवल एक निश्चित मात्रा में एक प्रकार के डिजाइनर जूते का उत्पादन किया जाता है, इसलिए सभी के पास वे जूते नहीं हो सकते हैं। न केवल एक जोड़ी को एक निजी वस्तु के रूप में देखा जाता है, बल्कि पूरी उत्पाद लाइन को शामिल किया जा सकता है।

सार्वजनिक वस्तु–एक निजी वस्तु एक सार्वजनिक वस्तु के विपरीत है। सार्वजनिक वस्तु आमतौर पर सभी के उपयोग करने के लिए खुले होते हैं और एक व्यक्ति द्वारा खपत किसी अन्य व्यक्ति की उपयोग करने की क्षमता को नहीं रोकती है। कई सार्वजनिक वस्तुओं का बिना किसी खर्च के उपभोग किया जा सकता है।

सार्वजनिक स्थानों पर पानी के फव्वारे सार्वजनिक वस्तुओं के रूप में योग्य होंगे, क्योंकि उनका उपयोग किसी के द्वारा भी किया जा सकता है और इसके पूरी तरह से तैयार होने की कोई उचित संभावना नहीं है; जैसे–रेडियो के कार्यक्रम किसी भी संख्या में लोग अन्य लोगों की क्षमता को प्रभावित किए बिना प्रसारण को सुन सकते हैं।

प्रमुख वस्तु के उत्पादन की समस्या

योग्य वस्तु का बाजार, अधूरे बाजार का एक उदाहरण है। एक निजी वस्तु के विपरीत, उपभोक्ता को शुद्ध निजी लाभ की खपत के समय पूरी तरह से मान्यता प्राप्त नहीं है। शुद्ध निजी लाभ किसी भी निजी लागत से कम खपत से प्राप्त उपयोगिता है और शुद्ध उपभोक्ता अधिशेष के बराबर है। शिक्षा के मामले में, जिसे व्यापक रूप से एक गुण अच्छा माना जाता है, विद्यार्थियों और छात्रों को संभवत: स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय में अच्छे ग्रेड प्राप्त करने के लिए विशिष्ट निजी लाभ का पता नहीं चल सकता है। उन्हें अध्ययन के लिए आवश्यक श्रम एवं त्याग के बारे में अच्छी तरह से पता होगा, लेकिन भविष्य में नौकरी, वेतन, स्थिति और कौशल के संदर्भ में उन्हें लाभ नहीं पता होगा, इसलिए, शिक्षा के साथ, अन्य योग्यता वस्तुओं की तरह, अपेक्षित लाभों के संदर्भ में महत्वपूर्ण सूचना अनिश्चित होती है।

उत्पादन संभावना वक्र

उत्पादन संभावना अनुसूची को रेखाचित्र में बदलकर हम उत्पादन संभावना वक्र प्राप्त कर सकते हैं। रेखाचित्र अनुसूची पर आधारित है। इसमें मक्खन का उत्पादन X-अक्ष पर और बंदूक का उत्पादन Y-अक्ष पर दिखाया गया है।

वक्र पर हम रूपांतरण की सीमांत दर भी माप सकते हैं। उदाहरण के तौर पर संभावनाओं C व D के बीच दर CG/GD है। D और E के बची यह दर DH/HE है।

संभावना वक्र का ढाल (slope) सीमांत रूपातंरण दर का माप होता है। यदि हम एक अवतल (concave) वक्र पर बायें से दायें चलें, तो उसके ढाल का मूल्य बढ़ता जाता है। अत: सीमांत रूपांतरण दर भी बढ़ती जाती है।

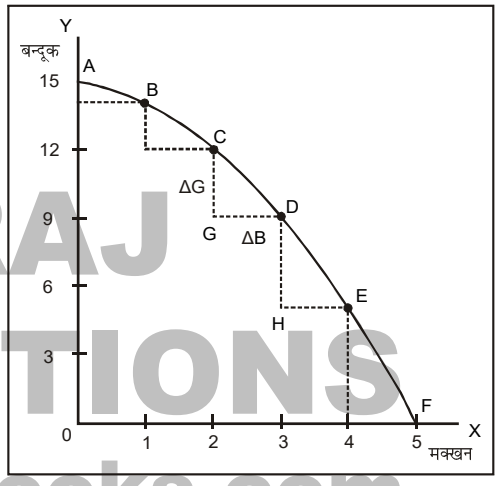

विशेषताएं

एक प्रतिनिधिक उत्पादन संभावना वक्र की दो विशेषताएं हैं–

1. बायें से दायें नीचे की ओर ढलवां–इसका अर्थ है कि एक वस्तु का अधिक मात्रा में उत्पादन के लिए दूसरी वस्तु का उत्पादन कम करना आवश्यक है, क्योंकि संसाधन सीमित है।

2. मूलबिन्दु की ओर अवतल (Concave)–नीचे की ओर ढलवां वक्र का ढाल निरंतर बढ़ता जाता है। ढाल सीमांत रूपांतरण दर भी हैं। अत: अवतलता का अर्थ है–बढ़ती सीमांत दर। यह उत्पादन संभावना वक्र की एक पूर्वधारणा भी है।

क्या उत्पादन संभावना वक्र एक सीधी रेखा हो सकती है?

हाँ, यदि हम यह पूर्वधारणा करें कि रूपांतरण की सीमांत दर स्थिर रहती है, यानि ढाल स्थिर है तो वक्र एक सीधी रेखा का रूप ही लेगी, लेकिन सीमांत रूपांतरण दर किस स्थिति में स्थिर रहेगी? ऐसा तब संभव है, जब हम यह पूर्वधारणा करें कि सभी संसाधन सभी वस्तुओं के उत्पादन में एक समान दक्ष हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com